खाकी योगी जी! तख्ती पर 'सुरक्षा' नहीं, 'अराजकता' लिखा है

विकास नारायण राय

यह देखना खासा दिलचस्प है कि इस बार के बंगाल चुनाव में ममता बनर्जी शासन की तथाकथित 'अराजकता' को एक प्रमुख चुनावी मुद्दा बनाने के लिए भाजपा ने उत्तर प्रदेश (यूपी) के बड़बोले मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को आगे कर दिया है। जबकि इन भगवा पुरुष का अपना कानून-व्यवस्था का ट्रैक रेकॉर्ड 'कानून का शासन' से एकदम बेपरवाह, बल्कि अराजक पुलिस व्यवस्था चलाने का रहा है।

मुस्लिम बहुल मालदा शहर में आयोजित बंगाल की अपनी पहली चुनावी सभा में योगी के दावे के अनुसार, उत्तर प्रदेश में अपराधी गले में जान बख्शने की तख्ती लटकाने को मजबूर कर दिए गए हैं। क्या सचमुच ? यदि ऐसा होता तो यूपी में आम लोगों का कानून के रास्ते सुरक्षा और न्याय मिल पाने का भरोसा उठ न गया होता।

एक जांचा-परखा तथ्य है कि समाज अपनी पुलिस के व्यवहार से भी बहुत कुछ सीखता है। जिस समाज में पुलिस कानून की परवाह नहीं करती, वहां लोग भी प्राय: कानून की धज्जियाँ उड़ाते मिलेंगे। उत्तर प्रदेश से इस हफ्ते हाथरस का एक विडियो वायरल हुआ है जिसमें गाँव की एक लड़की रो-रो कर अपने पिता के हत्यारे का 'एनकाउंटर' करने यानी उसे पुलिस द्वारा पकड़कर मार डालने की गुहार लगा रही है। जिस दबंग के खिलाफ लड़की की यौन प्रताड़ना का केस लड़की के परिवार ने 2018 में दर्ज कराया था, अब उसी व्यक्ति ने खेत में पिता को गोली मार कर मौत के घाट उतार दिया। जाहिर है, आज लड़की की 'एनकाउंटर' की मांग की रट लगाने का एक ही संदेश निकलता है- पीड़ित का योगी सरकार की कानून-व्यवस्था से भरोसा उठ गया है।

दरअसल, बतौर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के दावे कुछ भी रहे हों लेकिन उनके प्रदेश से आये दिन आती किसी न किसी लोमहर्षक अपराध की खबर से समाज हिला रहता है। अपराध नियंत्रण के नाम पर अपनी पुलिस को योगी ने, स्वयं उनके ही शब्दों में, 'राम नाम सत्य' करने का लाइसेंस दिया हुआ है। फलस्वरूप, उनकी निरंकुश पुलिस निरंतर हत्या, टार्चर, अपहरण, अपराधियों से मिलीभगत, झूठे मुकदमे और धन वसूली के आरोपों से घिरी मिलेगी।

योगी राज की यूपी के सन्दर्भ में यह कहना भी गलत नहीं होगा कि वहां पुलिस

योगी राज में सरकार समर्थित पुलिस का अपराधीकरण बढ़ा है

के भीतर सरकार समर्थित अपराधीकरण ने समाज में अपराधीकरण को हवा दी है, और, पुलिस की अपनी नृशंसता अपराध की नृशंसता में भी प्रतिबिंबित होती जा रही है।

दशकों से यूपी की प्रथा रही कि आंकड़ों की हेरा-फेरी से कागजों पर अपराध नियंत्रण को बेहतर दिखाया जा सकता है। दरअसल, ऐसा यूपी में ही नहीं, कमोबेश अन्य प्रदेशों में भी होता आया है। हालाँकि, इस प्रयास में योगी के लिए अपनी 'रामराज्य' वाली छवि को निभाना एक बड़ी समस्या है। क्योंकि सोशल मीडिया की सक्रियता के चलते उनकी पुलिस के लिए भी स्त्री विरोधी गंभीर अपराधों को छिपा पाना मुश्किल हो चला है।

इसी बृहस्पतिवार को स्वयं योगी के गृहनगर गोरखपुर में एक नाबालिग लड़की की सामूहिक बलात्कार की शिकायत पर थाने में कार्यवाही न होने पर सोशल मीडिया तुरंत सक्रिय हो गया। लिहाजा, पुलिस को मुकदमा भी दर्ज करना पड़ा और साथ ही दोषी पुलिसकर्मियों का निलंबन भी हुआ। भारत सरकार के संगठन एनसीआरबी के 2019 के आंकड़ों के अनुसार, 2015 के बाद चार वर्षों में यूपी में स्त्री विरुद्ध अपराध, देश में सबसे अधिक, 66 प्रतिशत बढ़ गए हैं। योगी की ऐन नाक के नीचे राजधानी लखनऊ में, प्रदेश भर में, सर्वाधिक स्त्री विरुद्ध अपराध रिपोर्ट हो रहे हैं।

यूपी में स्त्री विरुद्ध अपराधों को लेकर बंगाल चुनाव प्रचार के सन्दर्भ में एक आयाम और है। किसी भी चुनावी सभा में योगी रामराज्य का चारा भी फेंकने से नहीं चूकते।

इसे उन्होंने भाजपा के भीतर अपना एक विशिष्ट ब्रांड जैसा बना लिया है। राजनीतिक नफा-नुकसान के नजरिये से देखा जाए तो बंगाल में इससे ममता शासन की 'अराजकता' को तीखे रूप से रेखांकित करने में उन्हें आसानी भी होगी। लेकिन, योगी जी, रोजाना आपके शासित यूपी में घटने वाली कोई न कोई नृशंस आपराधिक घटना याद दिला जाती है कि यूपी में स्त्री के हाथ में भी एक तख्ती है और उस पर 'सुरक्षा' नहीं, 'अराजकता' लिखा है!

(पूर्व डायरेक्टर, नेशनल पुलिस अकादमी, हैदराबाद)

राष्ट्रीय सिर्फ मोदी की मां ही मां है, बाकी लोगों की मां फिर क्या है

यूसुफ किरमानी

किसी को भी किसी भी तरह की गाली देना निन्दनीय है। बीबीसी पर जिस तरह भारत के प्रधानमंत्री की माताजी के लिए अपशब्दों का इस्तेमाल हुआ, उसका समर्थन किसी भी कीमत पर नहीं किया जा सकता।

लेकिन ठहरिए...बीबीसी पर यह अचानक नहीं हुआ है। इसके पीछे सोची समझी रणनीति काम कर रही है। इसकी गहराई में जाएंगे तो आप मोदी के रणनीतिकारों के दिमाग की दाद दिए बिना नहीं रह सकेंगे। आइए उस गहराई को कुछ तथ्यों के जरिए नापने की कोशिश करते हैं। इन दिनों सोशल मीडिया पर राहुल गांधी सभी के डॉलिंग ब्वॉय, ब्ल्यू आईड ब्वॉय और न जाने क्या क्या बने हुए हैं। देसी भाषा में कहें तो सभी के चहेते बने हुए हैं। इसी बीच राहुल गांधी ने 1975 से 1977 तक भारत में लगे आपातकाल (इमरजेंसी) की भी आलोचना की। इसे भी चारों तरफ जबरदस्त सराहना मिली। पहली बार इंदिरा गांधी के पोते ने इमरजेंसी को गलत ठहराकर अपनी दादी को ही कटघरे में खड़ा कर दिया।

राहुल गांधी की तारीफ के इस चरमोत्कर्ष काल को लेकर भाजपा भी अचंभित है। कांग्रेसियों की नजर में नए नए जयचंद बने अवसरवादी नेता गुलाम नबी आजाद, कपिल सिब्बल और आनंद शर्मा भी इस हवा को रोकने में नाकाम हो रहे हैं। उधर, सोशल मीडिया पर मोदी का ग्राफ तेजी से नीचे जा रहा है। यह ग्राफ इतना नीचे चला गया है कि मोदी के प्रचार तंत्र को इसकी चिन्ता सताने लगी। जब ऐसे हालात बनते हैं तो इमोशनल कार्ड खेलकर मामले को बराबरी पर लाने की

राहुल गांधी की तारीफ के इस चरमोत्कर्ष काल को लेकर भाजपा अचंभित और चिंतित है

कोशिश की जाती है। ...और तभी यह घटना घटती है जब बीबीसी रेडियो के कार्यक्रम में मोदी की माता को अपशब्द बोले जाते हैं।

बीबीसी रेडियो के उस शो में एक कॉलर फोन पर पहले अंग्रेजी में बोलता है, फिर ठीकठाक हिन्दी में मोदी की मां के लिए अपशब्द कहता है। मैंने उस रिकॉर्डिंग को कम से कम दस बार सुना। उस शख्स का अंग्रेजी और हिन्दी का उच्चारण बिल्कुल शुद्ध है। यानी यह स्पष्ट है कि कॉल करने वाला भारतीय मूल का कोई शख्स है। उस कॉलर ने खासतौर पर मोदी की मां को अपशब्द कहने के लिए फोन किया। जिन लोगों ने बीबीसी को कॉल कराई और जिसने कुल की, उसे पता था कि इस पर विवाद होगा। यह कॉल विवाद खड़ा करने और मोदी के लिए हमदर्दी उभारने के लिए ही की गई थी। इसके पीछे कुछ लोग नहीं रहे होंगे, इसे न मानना मूर्खता होगी। हालांकि कुछ लोगों ने पूरी निर्लज्जता से कॉलर को खालिस्तानी बता डाला, वह इस बात की पुष्टि करता है कि एक तीर से कई शिकार करने की कोशिश की गई है। यह अब छिपी बात नहीं है कि विदेशों में रहने वाले सिखों की जायज हमदर्दी भारत में चल रहे सबसे बड़े किसान आंदोलन के साथ है। कॉलर को खालिस्तानी कहकर संबोधित करने के पीछे यही रणनीति है कि किसान आंदोलन को भी इससे जोड़कर बदनाम किया जा सके।

बीबीसी रेडियो के इस शो की क्लिपिंग उस आडियो के साथ बुधवार को जैसे ही बाहर आई, सोशल मीडिया पर मानो भाजपा आईटी सेल इंतजार कर रहा था। उसने मोर्चा संभाल लिया और बीबीसी को बुरा-भला कहते हुए मोदी के वो फोटो डाले गए जिसमें मोदी कहीं अपनी मां को व्हील चेयर पर घुमा रहे हैं, कहीं उनके साथ खाना खा रहे हैं, कहीं बैठे हुए हैं। इन सभी तस्वीरों के साथ बस एक ही मांग थी कि भारत में बीबीसी पर पाबंदी लगाई जाए। सोशल मीडिया पर भाजपा आईटी सेल ने मोदी और उनकी मां के साथ इतनी हमदर्दी जताई कि वो टॉप ट्रेंड में आ गया। मंगलवार को जिस सोशल मीडिया पर "मोदी नौकरी दो" ट्रेंड कर रहा था, बुधवार को मोदी की हमदर्दी लहर चल पड़ी। इस तरह राहुल के पक्ष में सोशल मीडिया पर जो ट्रेंड बना हुआ था, उसमें फौरन विराम लग गया।

ऐसे विवाद सिर्फ सोशल मीडिया पर ध्यान बंटाने के लिए खड़े किए जाते हैं। जिसमें भाजपा आईटी सेल को महारत हासिल है। ऐसी कारतूतें वह अक्सर करता है।

आप लोग अमेरिका में हाउडी मोदी प्रोग्राम नहीं भूले होंगे। आप लोग इंग्लैंड में मोदी के ओवरसीज फ्रेंड्स का कार्यक्रम नहीं भूले होंगे। कौन लोग थे जिन्होंने अमेरिका और इंग्लैंड में मोदी के भव्य कार्यक्रम कराए। इसके लिए विदेशी टीवी चैनलों पर स्पेस खरीदकर उन कार्यक्रमों का विज्ञापन देकर प्रचार कराया गया। अमेरिका और इंग्लैंड में हुए ऐसे कार्यक्रमों में मोदी से प्रायोजित सवाल कराने तक की व्यवस्था और उसमें हुई हास्यास्पद गलतियों के हम लोग गवाह हैं। यानी विदेशों में इतने मोदी प्रेमी हैं कि किसी से भी फोन कराकर ऐसा कृत्रिम विवाद खड़ा कराया जा सकता है। अमेरिका और इंग्लैंड का लोकतंत्र और अभिव्यक्ति की आजादी का सिलसिला कम से कम भारत से बहुत बेहतर है। इसलिए वहां उस कॉलर के खिलाफ कोई एफआईआर दर्ज नहीं होगी। याद कीजिए अंतरराष्ट्रीय पर्यावरणवादी ग्रेटा थनबर्ग के खिलाफ भारत में एफआईआर दर्ज करने में कोई हीलाहवाली नहीं की गई थी।

इन मांओं को भाजपाई भूल गए

बीबीसी रेडियो पर हुई इस विवादास्पद घटना पर भारत में राष्ट्रवादी जमात का खून खूब खौल रहा है। हमें उस पर ऐतराज नहीं है। लेकिन याद कीजिए शाहीनबाग की बिल्कीस दादी के लिए भाजपा-आरएसएस के नेताओं और कार्यकर्ताओं ने किन शब्दों का इस्तेमाल किया था।...याद कीजिए शाहीनबाग आंदोलन से जुड़ी सफूरा जरगर को जब गिरफ्तार किया गया और उनके प्रेग्नेंट होने का पता चला तो भाजपा-आरएसएस के नेताओं और कार्यकर्ताओं ने सफूरा के लिए किन शब्दों का चयन किया था। मजबूर होकर सफूरा के पति को सामने आना पड़ा। बॉलिवुड एक्ट्रेस करीना कपूर खान और उनके बेटे तैमूर को लेकर क्या कुछ प्रचारित नहीं किया गया।

दिल्ली के जनसंहार 2020 (Delhi Pogrom2020) में 70 साल की अकबरी बेगम को जिन्दा जलाकर मार डाला गया, उस मां के लिए आजतक किसी भी राजनीतिक दल ने उस परिवार से माफी नहीं मांगी। दिल्ली दंगों से संदर्भ रखने वाले दस्तावेजों में आज भी अकबरी बेगम के चेहरे पर उभरी झुर्रियों वाली तस्वीर मेरे सामने आती है तो मैं सिहर जाता हूं। उस मां को जिन्दा जलाते समय दिल्ली दंगे के आतंकवादियों ने पलभर भी नहीं सोचा कि वो क्या करने जा रहे हैं। ऐसे दोहरे मापदंड रखने वाली पार्टी भाजपा-आरएसएस के लोगों को सिर्फ मोदी की माता के लिए अपशब्द बोले जाने पर ही क्यों बुरा लगता है। उन्हें हर उस मां के दर्द का एहसास क्यों नहीं है जो तैमूर के पैदा करने पर टारगेट की जाती है, जो बिल्कीस और सफूरा कहलाने पर लक्ष्य की जाती है।

इस राजनीतिक दल को तब क्यों बुरा नहीं लगता जब शाहीनबाग में बैठी सशक्त महिलाएं बिरयानी खाने वाली बताई जाती हैं। जिस सम्मान की हकदार मोदी की माता हैं, उसी सम्मान की हकदार बिल्कीस दादी, तैमूर की मां करीना कपूर खान और सफूरा जरगर भी हैं।

(वरिष्ठ पत्रकार और राजनीतिक विश्लेषक)